P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-11* July- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

वर्तमान परिपेक्ष्य में स्वामी विवेकानंद के नव–वेदांतवाद की उपादेयता

The Utility of Swami Vivekananda Neo-Vedantism in the Present Context

Paper Submission: 13/07/2020, Date of Acceptance: 20/07/2020, Date of Publication: 21/07/2020

अर्चना
सह–आचार्य
इतिहास विभाग,
मेरठ कालेज,
मेरठ, भारत

सारांश

नव–वेदांत और उसके व्यावहारिक अनुप्रयोग के मूल सिद्धांतों को वेदों और उपनिषदों में वर्णित सिद्धांतों से ही लिया गया है। विवेकानंद ने अद्वैत तर्क का उपयोग करते हुए हिंदू सांस्कृतिक सुधार और उत्तरोतर भारतीय समाज के लिए दार्शनिक विचारों की नींव रखी। नव–वेदांत दर्शन में विवेकानन्द ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि मनुष्य को व्यावहारिक जीवन में किस प्रकार वेदांत की शिक्षा दी जा सकती है। उनका उद्देश्य यह खोज निकालना था कि वेदान्त का आदर्श न केवल आदर्श संसार में, अपितु व्यावहारिक संसार में भी मूल्यवान है। नव–वेदांत विविधता में एकता की भावना बनाने का एक तरीका प्रदान करता है। यह विभिन्न धर्मों को एक ही लक्ष्य के विभिन्न पथों के रूप में स्वीकार करता है और व्यवहार में विविधता उत्पन्न करता है।

The basic principles of Neo-Vedanta and its practical application are derived from the principles mentioned in the Vedas and Upanishads. Vivekananda, using Advaita logic, laid the foundation for philosophical ideas for Hindu cultural reform and post-Indian society. In Neo-Vedanta philosophy, Vivekananda has tried to prove how Vedanta can be taught to man in practical life. His aim was to discover that the ideal of Vedanta is valuable not only in the ideal world, but also in the practical world. Neo-Vedanta provides a way to create a sense of unity in diversity. It accepts different religions as different paths to the same goal and creates diversity in practice.

मुख्य शब्द : विवेकानन्द, नव–वेदांत, आध्यात्मिकता, उपनिवेश, व्यावहारिक।
Vivekananda, Neo-Vedanta, Spirituality, Upanishads, Pragmatics.

प्रस्तावना

वेदांत विश्व के प्राचीनतम धार्मिक ज्ञान के श्रोतो में से एक है। वर्गीकृत वेदांत दर्शन दो रूपों में विभाजित है–वेद का कर्मकाण्ड और ज्ञान–काण्ड। कर्मकाण्ड में नाना प्रकार के याग–यज्ञों की बातें हैं उनमें से अधिकांश का आज कोई उपयोग नहीं होता. कर्मकाण्ड का प्रधान भाव है– साधारण व्यक्ति के ४ कर्तव्य (पुरुषार्थ–धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) को जानना एवं मनुष्य जीवन के ४ आश्रमों– ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थी तथा सन्यासी के भिन्न भिन्न कर्तव्यों का पालन जिन्हें अब भी थोडा बहुत माना जा रहा है. 'ज्ञान–काण्ड' में आध्यात्मिक ज्ञान या शाश्वत सत्यों को संचित किया गया है, अतः वे सदैव प्रासंगिक बने रहते हैं। वेदांत दर्शन वेदों के ज्ञान कांड पर निर्भर था। शंकराचार्य अद्वैत वेदान्त के संस्थापक है और वेदांत के दार्शनिक थे। आधुनिक युग में नव–वेदांत के आंदोलन में विवेकानन्द का योगदान अतुलनीय है। उनके व्यावहारिक वेदांत पारंपरिक वेदांतिक संस्कृति की रेखा में एक नया भाष्य है। उन्होंने वेदांत को केवल अपने सैद्धांतिक अध्ययन तक ही सीमित नहीं रखा अपितु उनका व्यावहारिक जीवन तक उपयोग किया। वह केवल सैद्धांतिक दर्शन में विश्वास नहीं करते थे, लेकिन वह प्राचीन काल में उपयोग किए गए सिद्धांतों का व्यावहारिक प्रयोग करने में विश्वास रखते थे। वेदान्तवाद, शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत की पुनर्स्थापना और पुनर्कथन, पुनर्निमाण और पुनर्मूल्यांकन, आधुनिक तर्कों, आधुनिक मानव के लिए उपयुक्त, और सभी आधुनिक चुनौतियों के साथ समंजित करने वाला पुनरूत्थान और पुनर्व्याख्या है। विवेकानंद के नववेदांत का

अर्थ आदि शंकराचार्य द्वारा विकसित प्राचीन परंपरागत वेदांत से भिन्न है। उन्होंने नव–वेदांत को पारलौकिकता के साथ नए विचार, दर्शनशास्त्र से जोड़ा। उन्होंने चार योग का मॉडल पेश किये, जिसने उन्हें प्रत्येक मनुष्य के भीतर दैवीय शक्ति का एहसास करने के लिए व्यावहारिक वेदांत को उपस्थापित किया। उन्होंने भारतीय आध्यात्मिकता के साथ पश्चिमी भौतिकवाद को सफलतापूर्वक समाहित किया व उन्होंने समाज से जुड़े लोगों के दैनिक जीवन में अद्वैत वेदांत के अभ्यास को प्रोत्साहित किया एवं मानवतावादी मंच के माध्यम से आध्यात्म का प्रचार–प्रसार किया। उन्होंने भारतीय दर्शन की खोज की और अद्वैत वेदान्त के आधार पर नैतिक प्रणालियां अपनायी, जो मानव जाति की मुक्ति के लिए समाधान प्रस्तुत करती है। उनका व्यावहारिक वेदान्त आदर्शवाद को प्रतिबिम्बित करता है जिससे उपनिवेशवादी भारत में वह नव–वेदांतवादी और समाज–सुधारक के रूप में विद्यमान हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

विवेकानंद ने वेदांत की नवीन परिष्कृत तथा आशावादी व्याख्या प्रस्तुत करने की आवश्यकता को महसूस किया, इसलिए उन्होंने वेदांत के आदर्शवादी पक्ष को व्यवहारिक रूप दिया तथा वेदांत दर्शन को नव वेदांत के रूप में प्रस्तुत किया। इनके विचार में वेदांत द्वारा प्रतिपादित सत्य सिद्धांत एकांगी नहीं वरन सार्वजनीन है और साथ ही यह शाश्वत स्वरूप का है। इसलिए यह सभी व्यक्तियों को चाहे वह किसी भी जाति संप्रदाय अथवा राष्ट्र के किसी भी युग के रहने वाले क्यों ना हो आदर्श जीवन निर्माण में अपूर्व सहायता प्रदान करते हैं। आधुनिक काल में भी नव–वेदान्त की प्रासंगिकता बनी हुई है। इस लेख का उद्देश्य विवेकानंद के उसी नव वेदांत को प्रस्तुत करना तथा आधुनिक परिपेक्ष्य में इसकी उपादेयता को प्रस्तुत करना है।

साहित्यावलोकन

महर्षि श्रीकृष्णद्वैपायन वेदव्यासेन विरचितम ब्रह्मभाष्यम (वेदान्तसूत्र) प्रथम अध्याय गौडीय वेदांत प्रकाशन, गोरखपुर।

व्यास देव रचित वेदान्त–सूत्र में दर्शन को सारगर्भित ढंग से विविध उद्धरणों द्वारा अभिव्यक्त किया गया है. इस पुस्तक में तीनों– उपनिषद, गीता और वेदान्त–सूत्र को एकसाथ मिला कर 'प्रस्थान–त्रय' कहा जाता है. पारंपरिक रूप से इस दर्शन को 'वेदान्त–दर्शन' कहा जाता है, जिसमें अन्य सभी दर्शनों के, विशेष तौर से 'योग–दर्शन' की अच्छी बातों को भी समाहित किया गया है। तथा इस 'वेदान्त–दर्शन' को ही सनातन धर्म का मुख्य अधिकारी दर्शन माना जाता है।

विनोये के राय, विवेकानंद सामाजिक – राजनीतिक विचार, पॉपुलर पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, २०१८

समूचे जगत में स्वामी विवेकानंद के नाम से प्रसिद्ध निरेन्दरनाथ दत्त का भारत के सावतंतर्ता आंदोलन में अति – विशिष्ट स्थान है। औपचारिक तौर पर वह पीला चोला धारण करने वाले सन्यासी, धार्मिक उपदेशक तथा दार्शनिक थे। वह धार्मिक आंदोलन के संस्थापक और सघठनकर्ता थे। जिसे वेदांत वादी या सही–सही कहे तो नव – वेदांत वाद के नाम से जाना जाता है। वह राम कृष्ण मिशन के संस्थापक थे।

स्वामी विवेकानन्द, वेदान्त, रामकृष्ण मठ, नई दिल्ली, २००३

स्वामी विवेकानंद कृत वेदांत का यह दशम संस्करण है इसमें स्वामी जी के तत संबंधित विभिन्न महत्वपूर्ण भाषाओं एवं प्रवचनों का संकलन है जो उन्होंने भारत वर्ष, अमेरिका तथा इंग्लैंड में दिए थे। पुस्तक के अनुसार, वेदांत कोई ऐसा जटिल विषय नहीं है जो साधारण मानवीय बुद्धि से अगम्य है और जिसका हमारे प्रत्यक्ष जीवन में कोई संबंध नहीं, परंतु स्वामी जी ने अपने इन अधिकार पूर्ण भाषण द्वारा दर्शा दिया है यह धारणा नितांत भ्रमपूर्ण है। वेदांत के स्वरूप को स्पष्ट करने वाले गुण सिद्धांतों को सरल एवं शुद्ध रूप से इस हमारे सम्मुख इस पुस्तक पर प्रस्तुत किया गया है।

स्वामी विवेकानंद साहित्य, अद्वैत आश्रम, कोलकाता सप्तम खंड २००१

इस साहित्य में विवेकानंद के कर्मयोग, भक्तियोग, राजयोग, ज्ञानयोग, वेदांत दर्शन आदि को शामिल किया गया है। विवेकानंद के पूर्व अति एवं वेदांत परंपरा के प्रमुख अद्वैतवाद मे शंकराचार्य के दर्शन को भी इसमें उचित स्थान दिया गया है। विवेकानंद ने वेदांत की नवीन परिष्कृत तथा आशावादी व्याख्या प्रस्तुत करने की आवश्यकता को महसूस किया, इसलिए उन्होंने वेदांत के आदर्शवादी पक्ष को व्यवहारिक रूप दिया तथा वेदांत दर्शन को व्यावहारिक वेदांत के रूप में प्रस्तुत किया। उनकी इसी साहित्य को अद्वैत आश्रम कोलकाता द्वारा संग्रहित किया गया है।

डॉ जे पी सिंह, आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तनय 21st सदी में भारत PHI Learning private limited] New Delhi, २०१६

इस पुस्तक में डॉ सिंह ने व्यक्त किया कि नव वेदान्तवाद नए हिन्दू धर्म और सत्व का निर्माण करता है। उन्नीसवीं शताब्दी में उत्पन्न नव वेदान्तिक आंदोलनों द्वारा हिंदूवाद की पुनर्व्याख्या की गई और अस्पृश्यता एवं अंधविश्वास जैसे तत्वों को अस्वीकार किया गया।

ए आर देसाई, भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, SAGE पब्लिशिंग इंडिया, २०१८

यह पुस्तक एक सौ पचास सालों के दौरान भारतीय समाज के परिवर्तन का व्यापक अध्ययन प्रस्तुत करती है और बताती है कि सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक विभिन्न रूपों में भारतीय राष्ट्रवाद का उदय होता है। यह भारतीय राष्ट्रवाद की उत्पत्ति का एक ऐतिहासिक और व्यवस्थित परिदृश्य प्रस्तुत करती है। उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के भारतीय इतिहास के विश्लेषण के लिए ऐतिहासिक भौतिकवाद की पद्धति पर जोर देते हुए, लेखक उन विभिन्न ताकतों का पता लगाने और उनका आकलन करने में सक्षम रहा है जिन्होंने राष्ट्रवादी प्रभाव की व्यापकता में योगदान दिया है।

विवेकानन्द के नव–वेदांतवाद पर विचार

विवेकानंद के चिंतन की नींव मुख्यतया वेदांत में थी। स्वामी विवेकानंद नव वेदांतवाद के प्रणेता थे। भारत में उपनिषदों की दार्शनिक परंपरा को शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य आदि ने और भी आगे बढ़ाया। विवेकानंद ने इनकी दार्शनिक विचार पद्धति का पुनरावलोकन किया एवं नव वेदांतवाद का प्रतिपादन किया। विवेकानंद ने वेदांत की मात्र पुनर्व्याख्या नहीं की, उन्होंने भारत के सभी पवित्र ग्रंथों का अध्ययन किया – शंकराचार्य के ज्ञान–दर्शन मे, उपनिषदो मे, गीता मे, बुद्ध मे निहित ज्ञान से उन्होंने स्वंय को परिचित किया। दुनिया को देखने के तार्किक और विवेकपूर्ण तरीके से संपन्न, उन्होंने विश्व समाज के लिए एक दृष्टिकोण विकसित किया, जिसमें सभी विचारधाराओं का सर्वोत्तम समन्वय था। उन्होंने लोगों से शंकराचार्य का अनुसरण करने को कहा यद्यपि वे उनकी विचारधारा में कई अनिवार्य पक्षों से मतभेद रखते थे। उन्होंने संख्य ब्रह्माण्ड–शास्त्र को नव–वेदांत के द्वारा संशोधित रूप में स्वीकार किया पर अविचारपूर्वक और पूर्णरूप से नहीं। बुद्ध में जो कुछ सर्वोत्तम था, उसे उन्होंने, विशेषकर जाति की धारणा, चुन लिया। शंकराचार्य के अध्यात्म और बुद्ध की नैतिकता को उन्होंने इस प्रकार प्रतिपादित किया वह जीवन का निश्चयात्मक और सकारात्मक दर्शन था। विवेकानंद ने अपनी आत्मा को जान लेने के सिद्धांत का प्रतिपादन किया, जिसका अर्थ है संपूर्ण मानव का अध्यात्मकरण। उन्होंने आगे ब्रह्मांड के प्रक्षेपण के सिद्धांत का प्रतिपादन किया। इस सिद्धांत के अनुसार वही ब्रह्मांड है जो न केवल इस सृष्टि का करण है अपितु पदार्थ और द्रव्य है। उन्होंने संसार में कार्यरत तीन शक्तियों का ज्ञान प्राप्त किया–सत्त्व, राजस और तमस। ये तीनों शक्तियाँ या प्रवृत्तियां मनुष्य में भी निहित हैं, इसलिए मनुष्य ब्रह्मांड से भिन्न नहीं है बल्कि सम्पूर्ण प्रतिबिंब है––ब्रह्म–चित्–आनंद। विवेकानन्द का विचार था कि नव–वेदांत दर्शन में विश्व ब्रह्म है, निःस्वार्थ कर्म ही पूजा है और सभी निरर्थक गतिविधियां सामाजिक और आध्यात्मिक हैं। विवेकानंद वेदांत दर्शन द्वारा व्यक्ति को नि:स्वार्थ गतिविधि के लिए प्रोत्साहित करने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार उन्होंने वेदांत दर्शन को एक नया रूप देने का प्रयास किया जो मानव जाति के विकास के लिए बहुत ही व्यावहारिक और महत्वपूर्ण था। अद्वैत वेदांत के विचारों में सामाजिक दर्शन खींचकर उन्होंने भारत में सामाजिक सुधारों का मार्ग प्रशस्त किया।

विवेकानंद का मानना था कि वेदांत हमें नहीं सिखाता है की कोई चीज असंभव है। एक महत्वपूर्ण वाक्य जिसे उपनिषदों में महावाक्य के रूप में भी जाना जाता है, वह है "तत्त्वमसी" जिसका अर्थ है कि आप परमात्मा हैं। यह परिमित आत्मा और अनंत आत्मा की एकता को इंगित करता है। मानव आत्मा शुद्ध और सर्वज्ञ है। ऐसे महावाक्य स्वामीजी को व्यावहारिक अर्थ देने के लिए कहा गया है कि, "वेदांत पुरुषों को पहले खुद पर विश्वास करना सिखाता है।" विभिन्न धर्म हमें सिखाते हैं कि, जो लोग ईश्वर में विश्वास नहीं करते हैं वे नास्तिक हैं, लेकिन वेदांत कहता है, जो व्यक्ति खुद पर विश्वास नहीं करता वह नास्तिक है। वेदांत के अनुसार संसार में अंधकार नहीं है। हम अज्ञानी लोगों को लगता है कि अंधेरा हमारे चारों ओर है। वास्तव में दुनिया में कोई अंधेरा या कमजोरी नहीं है। विवेकानंद कहते हैं कि मूर्ख व्यक्ति अपने को निर्बल या अपवित्र मान सकता है। विवेकानंद का तर्क है कि, ब्रह्मांड की सभी शक्तियां पहले ही हमारी हैं। हमने अपने हाथ आंखों के सामने रखे हैं और रोते हैं कि अंधेरा है। हमें पता है कि हमारे चारों ओर कोई अंधेरा नहीं है, हाथ को जैसे ही दूर ले जायेंगें, प्रकाश फैल जायेगा और पता लगेंगा की अंधेरा कभी नहीं था। इस प्रकार वेदांत न केवल इस बात पर जोर देता है कि आदर्श व्यावहारिक है, बल्कि वह हर समय इस प्रकार रहा है। और यह आदर्श, यह वास्तविकता, हमारी अपनी प्रकृति है। बाकी सब जो आप देखते हैं वो गलत है, असत्य है।

विवेकानंद के नव–वेदांतवाद पर शंकराचार्य का प्रभाव

शंकराचार्य ने स्पष्ट किया है कि कर्म केवल चार प्रकार के हो सकते हैं। कोई कर्म किसी वस्तु को उत्पन्न कर सकता है या वह किसी वस्तु को परिवर्तित कर सकता है या किसी वस्तु को प्राप्त करने अथवा शुद्ध करने के लिए उसका उपयोग किया जा सकता है। वह प्रत्येक प्रकार के कर्म को भी बारी–बारी से अपने हाथ में लेते है और तर्क देते है कि मुक्ति कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो भौतिक, मौखिक या मानसिक किसी भी कार्य के द्वारा या तो उत्पन्न, संलग्न, संशोधित या शुद्ध की जा सकती है या फिर शुद्ध हो सकती है, उनका मुख्य तर्क यह है कि मुक्ति किसी प्रकार के कर्म का प्रभाव है, तो मुक्ति का भी आरम्भ होगा, वह कालातीत होगी, अतएव शाश्वत होगी, और यह इस प्रकार का परिणाम यह होगा कि मुक्ति नित्य है। शंकराचार्य वेदांत के अनुसार "ब्रह्मसत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः" की पद्यति का पालन करते हैं। उनका मत था कि मुक्ति ब्रह्ता होने के अलावा और कुछ नहीं, वही एक की जन्मजात अवस्था है, हालांकि उसके अज्ञान से नामोधता होती है। उनका कहना है कि उपनिषदों का उद्देश्य मात्र द्वैत–भाव को समाप्त करना है। ब्रह्म के साथ एकत्व की प्राप्ति की अब कोई आवश्यकता नहीं रह गई है क्योंकि वह पहले से मौजूद है। आत्मन शब्द के साथ–साथ शंकराचार्य के वाक्यांश 'न हेय ना उपादेय' (स्वीकृत या अस्वीकृत) का लगातार उपयोग किया है इंगित करता है कि स्वत: को किसी भी प्रकार के कर्म का लक्ष्य नहीं बनाया जा सकता है। शंकराचार्य का अद्वैत दर्शन वेदांत दर्शन ही अभिप्राय देता है शंकराचार्य ने ब्रह्म जैसे विषय पर मौन रहना ही श्रेयस्कर माना क्योंकि तर्काप्रतिष्ठात अर्थात तर्क से विरोधी बातें भी सही सिद्ध की जा सकती हैं। वेदांत का ब्रह्म श्रुति प्रमाण से ज्ञेय है। वेदांत कहता है – "ब्रह्मसत्यम् जगन्मिथ्या, जीवो ब्रह्मैव नापरः।" इसे व्यक्त करते हुए स्वामी विवेकानन्द कहते हैं– चाहे हम उसे वेदान्त कहें या और किसी नाम से पुकारें, परन्तु सत्य तो यह है कि धर्म और विचार में अद्वैत ही अन्तिम शब्द है, और केवल उसी के दृष्टिकोण से सब धर्मों और सम्प्रदायों को प्रेम से देखा जा सकता है। हमें विश्वास है कि भविष्य के प्रबुद्ध मानवी समाज का

यही धर्म है- अन्य जातियों की अपेक्षा हिन्दुओं को यह श्रेय प्राप्त होगा कि उनहोंने इसकी सर्वप्रथम खोज की।

विवेकानंद उपनिषदों में अभिव्यक्त आधारभूत अंतर्दृष्टियों पर आधारित वेदांत की संकल्पना को व्यापक रूप से लेते हैं, यद्यपि उनका मुख्य लक्ष्य शंकराचार्य की प्राचीन दृष्टि पर था। विवेकानंद के अनुसार, 'वेदान्त–दर्शन' ही एकमात्र वैसा दर्शन नहीं है, जिसे मनीषियों ने क्रमानुसार व्यवस्थित ढंग से विकसित किया है, उल्टे यह कुछ आध्यात्मिक–सत्यों के आविष्कारक ऋषियों द्वारा स्वतःस्फूर्त कथनों का संग्रह है। इतिहास के बाद वाले काल–खंड में इसी प्रस्थान–त्रय को प्रमुख आधार मानकर दर्शन की कई शाखायें विकसित हो गयीं, उनमें से तीन मतवाद– द्वैत, विशिष्टाद्वैत और अद्वैत–वाद ऐसे मतवाद हैं जो सम्पूर्ण वेदान्त दर्शन का प्रतिनिधित्व करते हैं। श्रीरामकृष्ण और स्वामी विवेकानन्द ने नवीन ढंग से इनकी व्याख्या करते हुए कहा, "अद्वैत दर्शन दृढ़ता से यह घोषित करता है कि केवल ब्रह्म या ईश्वर का ही अस्तित्व है तथा अज्ञान के कारण ही हमलोग जीव और जगत को ईश्वर से भिन्न देखते हैं।" वह संगठन की अद्वैत को वेदान्त का सार मानते हैं। वेदांत के बारे में वे कहते हैं, "जब भौतिकवाद सामने आया...तब शंकराचार्य ने वेदांत दर्शन को पुनर्जीवित किया। उपनिषदों में तर्क कला (अक्सर बहुत अस्पष्ट...) में शंकराचार्य ने बौद्धिक पक्ष पर बल दिया। उन्होंने लोगों के सामने अद्वैत की एक सुन्दर सुसंगत प्रणाली को तर्क देकर पेश किया...।" उनके अनुसार, अद्वैत वेदांत केवल तत्व मीमांसा सिद्धांतों का कुंजी है जो साधारण मानव बुद्धि से अगम में है और जिसका प्रत्यक्ष जीवन से कोई संबंध नहीं है

विवेकानंद का व्यवहारिक वेदांत

विवेकानंद ने शिकागो धर्म संसद (1893) में भाग लिया। वे भारतीय धर्म के केन्द्रीय धर्मशास्त्र, नववेदांत, की स्थापना में ही सफल नहीं रहे, बल्कि उन्होंने अपने विचारों को विश्वव्यापी बनाया। उनका दावा था कि नव–वेदांत ही एकमात्र सच्चा धर्म है जो धार्मिक विविधता को सहिष्णुता और धार्मिक सदभावना का सन्देश देता है। शिकागो धर्म संसद में सभी महान धर्मों की महानता को शामिल करना, विवेकानंद ने अपने आध्यात्मिक अनुभव के माध्यम से, अपने गुरु से लिया। रामकृष्ण परमहंस ने आधुनिक तर्कवादी और असभ्य अविश्वासियों के दिमाग से सभी संदेहों और भ्रांतियों को दूर करने के लिए इतनी सरल, प्रत्यक्ष और स्पष्ट अभिव्यक्ति दी जिसे विवेकानंद ने व्यावहारिक वेदांत के दर्शन में विकसित किया। तर्कवादियों के लिए, विवेकानंद ने अपने नव–वेदांत को साबित करने के लिए कुछ ऐतिहासिक तथ्य दिए। उन्होंने स्वीकार किया कि दुनिया के सबसे व्यस्त जीवन जीने वाले व्यक्तियों से कई वैदिक विचार निकलते हैं। स्वामी विवेकानन्द ने १ फरवरी, १८९५ को न्यूयार्क से कुमारी मेरी हेल को लिखित एक पत्र में कहा था– "मेरे पास विश्व को देने के लिए एक संदेश है, जिसे मैं अपनी ही शैली में दूंगा. मैं अपने संदेश को न तो हिन्दू धर्म, न ईसाई धर्म, न संसार के किसी और धर्म के साँचे में ढालूँगा, बस मैं केवल उसे अपने ही साँचे में ढालूँगा।" वह संदेश क्या है? अपने उस संदेश के सार को प्रस्तुत करते हुए, अपने ७ जून, १८९६ को मिस मार्गरेट नॉबल (सिस्टर निवेदिता) को लिखित पत्र में कहते हैं– "मेरा आदर्श अवश्य ही थोड़े से शब्दों में कहा जा सकता है, और वह है– मनुष्य–जाति को उसके दिव्य स्वरुप का उपदेश देना, तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसे अभिव्यक्त करने का उपाय बताना।"
वेदांत दर्शन का सबसे अच्छा हिस्सा ध्यान से आया था लेकिन सबसे व्यस्त दिमागों द्वारा व्यक्त किया गया था। विवेकानंद के अनुसार वेदांत दर्शन के लिए सांसारिक जीवन की उपेक्षा करने की आवश्यकता नहीं है। व्यवहारिक वेदांत, व्यवहार में वेदांत है। उनका मानना था, कि "धर्म और संसार में जीवन के बीच का काल्पनिक अंतर को मिटाकर वेदांत जीवन की शिक्षा देता है। वेदांत की सार्थकता को कैसे व्यवहार में ग्रहण कर सकते हैं, इसके लिए धर्म के रूप में इसे व्यावहारिक होना चाहिए। हमें अपने जीवन के हर पहलु में इसे अपनाने में सक्षम होना चाहिए। विवेकानंद के अनुसार व्यवहारिक वेदांत (१) सिद्धांत बहुत अच्छा है लेकिन अभ्यास के बिना अधूरा है। (२) व्यावहारिक वेदांत हमारे जीवन के हर हिस्से तक पहुँचता है। (३) व्यावहारिक वेदांत में एकता की शिक्षा दी जाती है और यही वजह है कि संसार और धर्म के बीच मतभेद अनुचित है।

हालांकि विवेकानंद खुद को वेदान्ती मानते हैं, पर वह कुछ फर्क भी रखते हैं। उन्होंने मिथ्या, अद्वैत, मोक्ष, माया आदि वेदान्त से शब्दों का प्रयोग किया है, परन्तु उनसे भिन्न ढंग से प्रयोग किया है अथवा हम कह सकते है कि उन्होंने इन शब्दों का प्रयोग प्रेरक ढंग से किया हैं। उन्होंने मिथ्या शब्द का प्रयोग एक विशेष अर्थ में किया, अर्थात् संसार का कोई निरपेक्ष या निश्चित स्थान नहीं हो सकता। इसी प्रकार वे माया को, 'हम क्या हैं और हम अपने चारों ओर क्या देखते हैं' के रूप में इसकी सरल व्याख्या करते हैं। अनुभव का संसार स्वतंत्रता और बन्धन, ज्ञान और अज्ञान, प्रेम और आवेश, यथार्थ और अयथार्थ के बीच घूमता है। विपरीत वस्तुओं के विरोध सहित माया का यह स्वभाव इस सृष्टि के तथ्य का कथन है। इसी प्रकार वह एकता के रूप में अद्वैत शब्द का उपयोग करते हैं। वह कहते हैं...वेदांत जीवन की शिक्षा देता है। विवेकानंद के मन में जो एकता है वह एक आदर्श है, जो बहुत्व में मुख्यतः वस्तुओं और व्यक्तियों में विद्यमान है। एकता के लिये संघर्ष आत्म–साक्षात्कार की प्रक्रिया है जिसमें कुछ ऐसा होता है जो उसमें होना चाहिए। वेदांत प्रकटतया व्यावहारिक है, लेकिन आदर्श के अर्थ में वह सदा ऐसा ही है।

वर्तमान परिपेक्ष्य में स्वामी विवेकानंद का नव–वेदांतवाद

स्वामी विवेकानंद सार्वभौमिक धर्म के संस्थापक थे और वे अद्वैत वेदांत की व्याख्या करते थे, जिसने हिंदू धर्म को सुधारने के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वामी विवेकानंद ने रामकृष्ण मिशन संस्थान के माध्यम से पश्चिम में अद्वैत वेदांत की व्याख्या की, जिसे बाद में 'नव–वेदांत' कहा जाने लगा। अद्वैत वेदांत की व्याख्या के लिए वे ज्ञानयोग, कर्मयोग और भक्तियोग प्रदान करते हैं। विवेकानंद को ज्ञान कर्म और भक्ति मार्ग के द्वारा सार्वभौमिक धर्म का भली–भांति ज्ञान हुआ जिससे उन्होंने अद्वैत वेदान्त की समझ को बढ़ाया। स्वामी विवेकानंद,

वेदांत के मंच पर पूर्व और पश्चिम में एक दूसरे के करीब पहुंचे। विश्व की महान कृति और वेदांत की सार्वभौमिकता ने विश्व के सब लोगों को एक साथ लाने के द्वार खोल दिए। विवेकानंद ने कहा कि वेदांत दर्शन में वास्तव में भारत के विभिन्न पंथों को शामिल किया गया था। बहरहाल, एक प्रश्न उठता ही है, विवेकानंद के अपने अद्वैत वेदांत के बारे में क्या राय है? वेदांत दर्शन पर अपने हार्वर्ड भाषण में विवेकानंद ने कहा है कि 'अधिकांश भारतीय लोग द्वंद्ववादी हैं और कुछ ही लोग अद्वैतवादी हैं। अद्वैत अनुभव या अवस्था अवर्णनीय है। वास्तव में अभिव्यक्ति 'अद्वैत अनुभव' तार्किक अभिव्यक्ति नहीं हो सकती है।' विवेकानंद ने कहा कि वेदांत दर्शन को व्यावहारिक धर्म के रूप में लिया जा सकता है। उन्होंने व्यावहारिक वेदांत के महत्व को महसूस किया और इसीलिए, वे वास्तविक जीवन में व्यावहारिक वेदांत के महत्व को फैलाना चाहते हैं। स्वामी विवेकानंद हमारे समाजध्दुनिया में व्यावहारिक जीवन में वेदांत के महत्व का प्रयास करते हैं।

विवेकानंद ने आधुनिक भारत के निर्माण में पश्चिमी उदारवादी चिंतन एवं इसके मूल्यों की भूमिका को रेखांकित करते हुए करुणा, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, समानता और विश्वबंधुत्व पर जोर दिया। उन्होंने विचारों की स्वतंत्रता की हिमायत करते हुए कहा, "विचार और कर्म की स्वतंत्रता जीवन, विकास तथा कल्याण की अकेली शर्त है। जहाँ यह न हो, वहाँ मनुष्य, जाति तथा राष्ट्र सभी पतन के शिकार होते हैं।" धर्म की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि धर्म का आध्यात्मिक संबंध होता है, जो प्रत्येक व्यक्ति को एक ही जंजीर में बांधे रखता है। विभिन्न धर्म के लोगों के अनुयायियों ने वैदिक धर्म को अपने तरीके से गुणगान किया है और अन्य समुदाय अनुयायियों को इसे करने के लिए कोई प्रतिबंध नहीं है। अगर हम ऐसे धार्मिक अनुयायियों में हस्तक्षेप करें जो धार्मिक रीति–रिवाजों का पालन न करें तो जाहिर है कि विभिन्न धार्मिक अनुयायियों के बीच विरोध उत्पन्न होगा। इसलिए इस समय धर्म के मामले में कोई असंगति पैदा नहीं होनी चाहिए। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि कुछ अशिक्षित लोग भी हमारे समाज में मौजूद हैं और वे आँख मूंद कर धर्म पर विश्वास करते हैं और इसलिए, कुछ गलत व्याख्या उनके द्वारा धर्म के बारे में पैदा होगी। इस संबंध में हमें महान दार्शनिक, शिक्षाविद् तथा समाज में सुधारवादी स्वामी विवेकानंद के व्यावहारिक वेदांत निहितार्थ का अनुसरण करना चाहिए। यदि हम स्वामी विवेकानंद के विचार का अनुसरण करेंगे तो हमारा समाज वर्तमान समय में एक आदर्श समाज होगा। यह एक दिन का काम नहीं है, लेकिन अगर हम अपने रोजमर्रा के जीवन में इस आदर्श सोच को बनाए रखें तो वास्तव में हम इस विचार से प्रेरित हैं और धीरे–धीरे हम बाकी के लोगों को, जो हमारे समाज में और अंत में आदर्श समाज में रहते थे, प्रेरणा देंगे।

निष्कर्ष

स्वामी विवेकानंद नव वेदांतवादी थे। उन्होंने धर्म को कर्मकांड से अलगाया और दीन–दुखियों के उद्धार पर बल दिया। वे प्राच्य और पाश्चात्य में संतुलन के आग्रही थे। आधुनिक समय में, स्वामी विवेकानंद के नव–वेदांतवाद के महत्व को हम अनदेखा नहीं कर सकते क्योंकि इसका प्रयोग हमारे समाज और रोजमर्रा के जीवन के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। स्वामी विवेकानंद भारतीय राष्ट्रीयता के प्रणेता थे। उन्होंने पवित्रता, धैर्य और विश्वास पर बल दिया और कहा कि आदर्श शिक्षा ने समाज व राष्ट्र के विकास के लिए किसी भी श्रेष्ठ कार्य के लिए प्रेरित किया है। स्वामी विवेकानंद के अनुसार, हमारे समाज में वेदांत के निहितार्थ बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि यहां विभिन्न धर्म–समाज हैं तथा उनके विचार और आदर्श वाक्य अलग–अलग हैं परंतु सामाजिक जीवन के रूप में हमें अपने समाज के विकास के लिए कुछ जिम्मेदार होना चाहिए। उनके अनुसार हमारे राष्ट्र का युवा को जाग कर तब तक नहीं रुकना चाहिए जब तक वह अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच जाते। उनके लिए समाज हमारे राष्ट्र का आधार होना चाहिए। स्वामी विवेकानंद के अनुसार, समाज में स्कूल, धार्मिक संस्थाएं, विभिन्न क्लब और संस्थाएं शामिल हैं, इसलिए उनको समाज के नागरिक नागरिकों के लिए व्यावहारिक वेदांत का संदेश फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए। स्वामी विवेकानंद के नव–वेदांतवाद में नैतिक पहलू भी महत्वपूर्ण हैं एवं यह अन्य सभी पक्षों से ऊंचा है इसलिए अगर हम अपने जीवन में इस मार्ग का अनुसरण नहीं करेंगे, तो वह व्यर्थ है। वर्तमान समय में, नैतिक पहलू की कमी हमारे पुरे समाज में मौजूद है जिसे नव–वेदांतवाद के द्वारा ही दूर किया जा सकता है। आज 21वीं सदी में जीवन में मौजूद अनेकानेक चुनौतियों का समाधान स्वामी विवेकानन्द के दर्शन में है ,बस आवश्यकता है उनके सिद्धांतों या उनकी विचारधारा को सुनियोजित तरीके से आत्मसात करने की।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *Swami, Suparnananda, (First Pub-2000) Vedanta Concepts and Application, Ramakrishna Mission Institute of Culture, Gol Park Kolkata.*
2. *Swami, Amarananda (2003), Stories from Vedanta, Advaita Ashrama Publication House of Ramakrishna Math, 5 Delhi Entally Road, Kolkata.*
3. *Nakamura, Haji Mie, (1990) A History of Early Vedanta, Philosophy Motilal Banarsidass Delhi.*
4. *Paul, Dr. Dausset (1987) The System of the Vedanta Karan Publications Delhi.*
5. *Datta, Dr. Bhupendranath, (2nd Ed-; 1993) Swami Vivekananda: Patriot Prophet, Nababharat Publishers; Calcutta.*
6. *The Complete Works of Swami Vivekananda, Mayavati Memorial Edition, published by Advaita Ashrama, 5 Dehi Entally Road Kolkata.*
7. *Dasgupta S.N. (2018) A History of Indian Philosophy, Vol-1 Rupa Publications India.*
8. *Chinmayananda, Swami (commentary, 2006) Vivekacudamani, (An Intellectual Exploration into the Infinite and the eternal) by Adi Sankaracarya, published by Chinmaya Prakashan, India.*
9. *Sharma, Dr. Chandradhar (1987): — A Critical Survey of Indian Philosophy, Motilal Banarsidass, Delhi.*

10. Deutsch, Eliot (1969):—Advaita Vedanta A Philosophical, Reconstruction University of Hawaii Press, Honolulu.
11. Radhakrishnan, Dr. (2009) —Indian Philosophy, published by Oxford University Press, India.
12. ए आर देसाई, भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, SAGE पब्लिशिंग इंडिया, २०१८
13. विनोये के राय, विवेकानंद सामाजिक – राजनीतिक विचार, पॉपुलर पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, २०१८
14. स्वामी विवेकानन्द, वेदान्त, रामकृष्ण मठ, नई दिल्ली, २००३
15. स्वामी विवेकानंद साहित्य, अद्वैत आश्रम, कोलकाता सप्तम खंड २००१
16. डॉ जे पी सिंह, आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तनय 21st सदी में भारत PHI Learning private limited,NewDelhi, २०१६